

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 27-10-2025

विषय सूची

- » भारत की शास्त्रीय भाषाएँ
- » धार्मिक स्वतंत्रता और निजता का अधिकार परस्पर जुड़े हुए हैं: सर्वोच्च न्यायालय
- » गूगल का एआई मॉडल प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए कैंसर कोशिकाओं को उजागर करने में सहायता करता है
- » भारत-जापान संबंध और काड

संक्षिप्त समाचार

- » रानी चेन्नम्मा
- » पूर्वी/ईस्ट तीर आसियान का 11वां सदस्य
- » कॉफी
- » महा मेडटेक मिशन
- » एक्स्ट्रीमम-सीकिंग (ES) फीडबैक सिस्टम
- » उत्तराखंड बाहरी वाहनों पर 'ग्रीन उपकर' लगाने की योजना बना रहा है
- » राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण(NBA)
- » पश्चिमी घाट पर संरक्षण संबंधी चिंताएँ
- » युगे युगीन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय
- » रामपुर और मुधोल हाउंड नस्ल के कुत्तों को बीएसएफ में शामिल किया जाएगा

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ

संदर्भ

- 2025 तक, कुल 11 भारतीय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है।

शास्त्रीय भाषाओं के बारे में

- भारत सरकार ने 2024 में मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बांग्ला भाषाओं को 'शास्त्रीय भाषा' का दर्जा प्रदान किया।
- छह भारतीय भाषाओं — तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और ओड़िया — को 2004 से 2024 के बीच पहले ही शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जा चुका है।
- सभी शास्त्रीय भाषाएँ संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध हैं।
- **शास्त्रीय भाषा के लिए मानदंड:**
 - ▲ इसके प्रारंभिक ग्रंथों या अभिलेखित इतिहास की प्राचीनता, जो 1,500–2,000 वर्षों की अवधि को दर्शाती हो।
 - ▲ प्राचीन साहित्य या ग्रंथों का ऐसा भंडार जो पीढ़ियों द्वारा विरासत के रूप में माना गया हो।
 - ▲ ज्ञानवर्धक ग्रंथ, विशेष रूप से गद्य रचनाएँ, साथ ही काव्य, शिलालेख और अभिलेखीय प्रमाण।
 - ▲ शास्त्रीय भाषा और उसका साहित्य वर्तमान रूप से भिन्न हो सकता है या मूल रूप से विकसित बाद के रूपों से असंगत हो सकता है।
- **महत्त्व:** किसी भाषा को शास्त्रीय के रूप में मान्यता देना उसके ऐतिहासिक महत्व और भारत की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक पहचान पर उसके गहरे प्रभाव को सम्मानित करने का एक तरीका है।
 - ▲ यह प्राचीन ज्ञान, दर्शन और मूल्यों को हजारों वर्षों तक संरक्षित एवं प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
 - ▲ यह दर्जा न केवल इन भाषाओं की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, बल्कि इनके संरक्षण, प्रचार और गहन अध्ययन के प्रयासों को भी समर्थन प्रदान करता है।

शास्त्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

- **केंद्रीय संस्थान:** सभी भारतीय भाषाओं, जिनमें शास्त्रीय भाषाएँ भी शामिल हैं, के प्रचार-प्रसार का कार्य

केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL) के माध्यम से किया जाता है।

- ▲ यह शिक्षा मंत्रालय का अधीनस्थ कार्यालय है, जिसकी स्थापना 1969 में मैसूर में की गई थी।
- ▲ संस्थान कई व्यापक योजनाओं के माध्यम से भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देता है।
- **विशेष केंद्र:** इसके अतिरिक्त शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन और प्रचार के लिए विशेष केंद्र स्थापित किए गए हैं, जो स्वतंत्र रूप से या CIIL के अंतर्गत कार्य करते हैं।
 - ▲ शास्त्रीय भाषाओं के चार केंद्र केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL), मैसूर के अधीन कार्य करते हैं, जबकि तमिल भाषा का केंद्र स्वायत्त है।
 - ▲ संस्कृत के प्रचार हेतु समर्पित विश्वविद्यालयों को भी केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय से सीधे वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।

आठवीं अनुसूची

- भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषाओं की सूची दी गई है।
- संविधान का भाग XVII अनुच्छेद 343 से 351 तक आधिकारिक भाषाओं से संबंधित है।
- आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है:
 - ▲ असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी।
 - ▲ इन भाषाओं में से 14 भाषाएँ संविधान में प्रारंभ में शामिल थीं।
 - ▲ बाद में सिंधी को 1967 में जोड़ा गया; कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को 1992 में जोड़ा गया; तथा बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली को 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा जोड़ा गया।

धार्मिक स्वतंत्रता और निजता का अधिकार परस्पर जुड़े हुए हैं: सर्वोच्च न्यायालय

संदर्भ

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में यह माना है कि अनुच्छेद 25 के अंतर्गत धार्मिक स्वतंत्रता और अनुच्छेद 21 के अंतर्गत निजता का अधिकार गहराई से परस्पर जुड़े हुए हैं।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

- यह निर्णय उत्तर प्रदेश धर्मांतरण प्रतिषेध अधिनियम की विभिन्न धाराओं को चुनौती देने वाली कई याचिकाओं के जवाब में आया, जिसमें व्यक्तिगत स्वायत्तता और राज्य नियंत्रण के बीच संवैधानिक संतुलन को उजागर किया गया।
- न्यायालय ने कहा कि निजता “पूर्व शर्त” है धार्मिक स्वतंत्रता के प्रयोग की, क्योंकि व्यक्तिगत आस्था के विकल्प आंतरिक विश्वास और अंतःकरण से जुड़े होते हैं।
- न्यायालय ने यह भी कहा कि व्यक्तिगत विश्वास प्रणाली में राज्य का हस्तक्षेप, जैसे धर्मांतरण की अनिवार्य सूचना या पूर्व राज्य अनुमोदन, गोपनीयता और धार्मिक स्वतंत्रता दोनों का उल्लंघन कर सकता है।

निर्णय का महत्व

- यह निर्णय कमजोर व्यक्तियों को जबरदस्ती से बचाने और स्वैच्छिक आस्था परिवर्तन का सम्मान करने के बीच संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।
- यह सहिष्णुता को बढ़ावा देता है, यह स्वीकार करते हुए कि विश्वास व्यक्तिगत होता है और राज्य की निगरानी से परे है।
- यह अनुच्छेद 21 के अंतर्गत “व्यक्तिगत स्वतंत्रता के क्षेत्र” के विस्तार की दिशा में सर्वोच्च न्यायालय की निरंतरता को दर्शाता है।
- न्यायालय की तर्क प्रणाली शफीन जहां बनाम असोकन के.एम. (2018) के साथ सामंजस्यशील है, जिसमें

सर्वोच्च न्यायालय ने विश्वास और विवाह के मामलों में व्यक्ति की स्वायत्तता को बरकरार रखा था, यह स्वीकार करते हुए कि ऐसे विकल्प व्यक्तिगत स्वतंत्रता के केंद्र में हैं।

संवैधानिक प्रावधान

- अनुच्छेद 25(1):** सभी व्यक्तियों को अंतःकरण की स्वतंत्रता और धर्म को स्वतंत्र रूप से स्वीकारने, पालन करने तथा प्रचार करने का अधिकार प्रदान करता है, बशर्ते कि यह सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता एवं स्वास्थ्य के अधीन हो।
- अनुच्छेद 25(2)(b):** राज्य को सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता या स्वास्थ्य के हित में धार्मिक धर्मांतरण को नियंत्रित या प्रतिबंधित करने की अनुमति देता है, लेकिन स्वैच्छिक व्यक्तिगत आस्था परिवर्तन में हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देता।
- अनुच्छेद 21:** जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार सुनिश्चित करता है, जिसे न्यायिक रूप से गोपनीयता तक विस्तारित किया गया है, जिसमें न्यायमूर्ति के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ, 2017 में विचार, विश्वास एवं अंतःकरण की आंतरिक स्वतंत्रता शामिल है।
- अनुच्छेद 19(1)(a):** भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है, जिसमें अपनी धार्मिक पहचान को व्यक्त करने या न करने का अधिकार शामिल है।

निष्कर्ष

- यह निर्णय धार्मिक स्वतंत्रता के दायरे को पुनर्परिभाषित करता है, यह स्वीकार करते हुए कि विश्वास और गोपनीयता संविधान के एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
- यह उस सिद्धांत को सुदृढ़ करता है कि अंतःकरण के मामलों में व्यक्तिगत स्वायत्तता को राज्य नियंत्रण पर वरीयता दी जानी चाहिए।
- यह ऐसे कानूनों और नीतियों की मांग करता है जो नागरिकों को जबरदस्ती से बचाते हुए विश्वास एवं गरिमा में निहित व्यक्तिगत विकल्पों का सम्मान करें।

Source: TOI

गूगल का एआई मॉडल प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए कैंसर कोशिकाओं को उजागर करने में सहायता करता है

समाचार में

- गूगल डीपमाइंड ने घोषणा की है कि उसके एआई मॉडल C2S-Scale ने कैंसर कोशिकाओं के व्यवहार पर एक नया अनुमान प्रस्तुत किया, जिसे बाद में प्रयोगशाला परीक्षणों में सत्यापित किया गया।

C2S-Scale

- यह बड़े भाषा मॉडल्स (LLMs) का एक समूह है, जो गूगल की Gemma-2 आर्किटेक्चर पर आधारित है।
- यह जैविक डेटा की व्याख्या करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो सिंगल-सेल RNA अनुक्रमण को सरल “कोशिका वाक्य” में परिवर्तित करता है।
- यह 5 करोड़ से अधिक कोशिकाओं पर प्रशिक्षित है और इसका 27 अरब पैरामीटर वाला मॉडल ऊतक एवं रोगों में जीन अभिव्यक्ति पैटर्न को सीखता है, जिससे यह प्राकृतिक भाषा में कोशिकीय व्यवहार को समझने में सक्षम होता है।

नवीनतम विकास

- C2S-Scale ने एक नया अनुमान प्रस्तुत किया कि दवा सिल्लिमेटासर्टिब, यदि कम मात्रा में इंटरफेरॉन के साथ दी जाए, तो कुछ कैंसर कोशिकाओं को प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए अधिक स्पष्ट बना सकती है।
- प्रयोगशाला परीक्षणों ने न्यूरोएंडोक्राइन कैंसर कोशिकाओं में इस भविष्यवाणी की पुष्टि की, जिसमें निर्दिष्ट परिस्थितियों में एंटीजन प्रस्तुति में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई।

स्वास्थ्य सेवा में एआई और LLMs की भूमिका

- परिवर्तनकारी तकनीक:** एआई, विशेष रूप से बड़े भाषा मॉडल्स (LLMs), स्वास्थ्य सेवा को बदल रहे हैं, जो विशाल जैव-चिकित्सकीय एवं नैदानिक डेटा सेट्स का विश्लेषण करके तीव्र निदान एवं नवाचार को संभव बनाते हैं।
- जीवविज्ञान की व्याख्या:** C2S-Scale जैसे मॉडल्स कोशिकीय और आनुवंशिक संकेतों की व्याख्या करते

हैं, जिससे वैज्ञानिकों को रोग तंत्र एवं कोशिकीय व्यवहार को समझने में सहायता मिलती है।

- डिजिटल वैज्ञानिक सहयोगी:** LLMs आभासी सहयोगियों की तरह कार्य करते हैं, परीक्षण योग्य अनुमान उत्पन्न करते हैं, डेटा को सत्यापित करते हैं, और जैव-चिकित्सकीय अनुसंधान को गति प्रदान करते हैं।
- दवा खोज:** ये दवा-कोशिका अंतःक्रियाओं का अनुकरण करते हैं, नए चिकित्सीय लक्ष्यों की पहचान करते हैं, और अनुसंधान एवं विकास चक्रों की लागत एवं समय को कम करते हैं।
- सटीक चिकित्सा:** व्यक्तिगत आनुवंशिक और आणविक प्रोफाइल के आधार पर उपचार को अनुकूलित करते हैं, जिससे प्रभावशीलता बढ़ती है तथा दुष्प्रभाव कम होते हैं।
- रोगी देखभाल और सहभागिता:** एआई-संचालित चैटबॉट्स और वर्चुअल सहायक 24x7 सहायता, उपचारोत्तर मार्गदर्शन एवं जीवनशैली परामर्श प्रदान करते हैं।
- नैतिक निगरानी:** स्वास्थ्य सेवा में एआई के जिम्मेदार एकीकरण के लिए डेटा गोपनीयता, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना आवश्यक है।

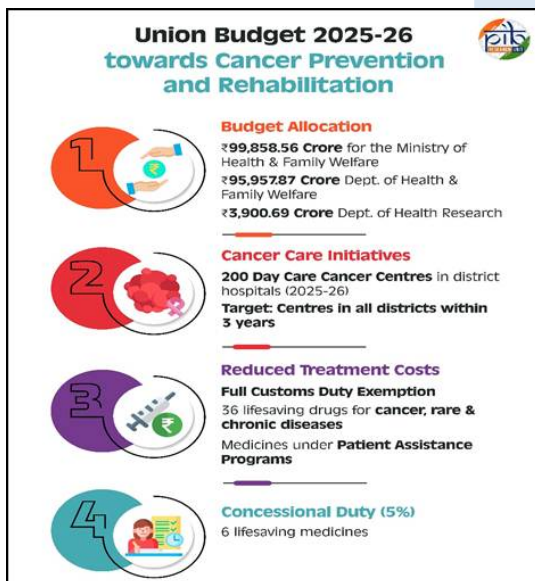
कैंसर के बारे में

- अवलोकन:** यह रोगों का एक समूह है, जिसकी विशेषता असामान्य कोशिकाओं की तीव्र वृद्धि है, जो आसपास के ऊतकों पर आक्रमण कर सकती हैं और अन्य अंगों में फैल सकती हैं (मेटास्टेसिस), जो कैंसर से संबंधित मृत्युओं का प्रमुख कारण है।
- कारण:** यह एक बहु-चरणीय प्रक्रिया के माध्यम से विकसित होता है, जो आनुवंशिक कारकों और बाहरी तत्वों से प्रभावित होता है, जिनमें भौतिक (जैसे विकिरण), रासायनिक (जैसे तंबाकू, शराब, एस्बेस्टस), एवं जैविक कार्सिनोजेन्स (जैसे वायरस और बैक्टीरिया) शामिल हैं।
- ▲ उम्र बढ़ने से कैंसर का जोखिम बढ़ता है, क्योंकि समय के साथ जोखिमों का संचय होता है और कोशिकीय मरम्मत तंत्र कमजोर हो जाते हैं।

- **रोकथाम और उपचार:** शीघ्र पहचान और उचित उपचार से परिणामों में उल्लेखनीय सुधार होता है।
 - ▲ रोकथाम के उपायों में तंबाकू और शराब से बचाव, स्वस्थ आहार एवं वजन बनाए रखना, नियमित व्यायाम, टीकाकरण, सूर्य से सुरक्षा, विकिरण का सुरक्षित उपयोग, तथा प्रदूषकों व कार्सिनोजेन्स के संपर्क को कम करना शामिल है।

भारत में संबंधित कदम

- भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) के अंतर्गत राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम (NCRP) 1982 से कैंसर की घटनाओं, भार और प्रवृत्तियों को ट्रैक कर रहा है, जो डेटा एकत्र करने और विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे साक्ष्य-आधारित नीति निर्णय संभव होते हैं।
- **केंद्रीय बजट 2025-26:** कैंसर देखभाल को प्राथमिकता दी गई है।



- **कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और स्ट्रोक की रोकथाम एवं नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम (NPCDCS):** यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के अंतर्गत एक प्रमुख पहल है, जो गैर-संचारी रोगों (NCDs), जिनमें कैंसर भी शामिल है, को नियंत्रित करने पर केंद्रित है।
- 2018 में शुरू किया गया आयुष्मान भारत कार्यक्रम कमजोर वर्गों को सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करता है, जिसमें कैंसर देखभाल भी शामिल है।

- ▲ यह कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी और सर्जिकल ऑन्कोलॉजी को कवर करता है, और 30 दिनों के अंदर उपचार सुनिश्चित करता है।
- **अप्रैल 2024:** भारत ने कैंसर देखभाल में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की, जब नेक्सकार19(NexCAR19) लॉन्च किया गया—देश की प्रथम स्वदेशी रूप से विकसित CAR-T सेल थेरेपी, जो IIT बॉम्बे, टाटा मेमोरियल सेंटर और इम्यूनोएक्ट(ImmunoACT) के बीच एक अभूतपूर्व सहयोग से विकसित की गई।
- **सितंबर 2024:** भारत ने अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ साझेदारी में क्वाड कैंसर मूनशॉट लॉन्च किया, जिसका उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सर्वाइकल कैंसर को समाप्त करना है।

Source :IE

भारत-जापान संबंध और क्वाड

संदर्भ

- जापान की नव-निर्वाचित प्रधानमंत्री ने रक्षा व्यय बढ़ाने और भारत तथा क्वाड गठबंधन के अन्य सदस्य देशों — अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया एवं भारत — के साथ रणनीतिक संबंधों को गहरा करने का संकल्प लिया है।

जापान की दृष्टि

- सानो ताकाइची, जापान की प्रथम महिला प्रधानमंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा पर अपने दृढ़ दृष्टिकोण के लिए जानी जाती हैं।
- उनकी सरकार ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के जापान के पारंपरिक शांतिवादी रक्षा नीति (अनुच्छेद 9) से हटने के संकेत दिए हैं। उन्होंने वादा किया है कि वे:
 - ▲ रक्षा व्यय को वर्तमान जीडीपी के 2% से अधिक बढ़ाएंगी;
 - ▲ जापान की आत्म-रक्षा बलों का आधुनिकीकरण करेंगी;
 - ▲ सैन्य हस्तक्षेप को सीमित करने वाले संवैधानिक प्रावधानों की पुनः समीक्षा करेंगी।

सुरक्षा गठबंधनों के प्रति प्रतिबद्धता

- उन्होंने क्वाड (जापान, भारत, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया) जैसे ढांचों में जापान की भागीदारी एवं अमेरिका, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस और ASEAN देशों के साथ साझेदारी पर बल दिया।
- उन्होंने यह रेखांकित किया कि 'स्वतंत्र, खुला और स्थिर अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था' पर 'शक्ति संतुलन में ऐतिहासिक बदलाव' एवं 'तीव्र होती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा' से दबाव है, तथा रूस, चीन तथा उत्तर कोरिया को गंभीर सुरक्षा चिंताओं के रूप में चिन्हित किया।

भारत-जापान संबंधों के बारे में

- **ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:** भारत एवं जापान के बीच एक दीर्घकालिक सभ्यतागत संबंध है, जो बौद्ध सांस्कृतिक जुड़ाव और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की कूटनीतिक पहल पर आधारित है।
 - ▲ आधुनिक रणनीतिक सहयोग की शुरुआत प्रधानमंत्री शिंजो आबे की 2007 की भारत यात्रा और उनके 'दो समुद्रों का संगम' भाषण से हुई — जो क्वाड ढांचे की वैचारिक नींव था।
- **रणनीतिक साझेदारी:** द्विपक्षीय संबंधों को 2014 में भारतीय प्रधानमंत्री की जापान यात्रा के दौरान 'विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी' का दर्जा दिया गया।
 - ▲ यह साझेदारी रक्षा, प्रौद्योगिकी, अवसंरचना और समुद्री सुरक्षा को समाहित करती है, जिसमें शामिल हैं:
 - 2+2 मंत्री स्तरीय संवाद (विदेश और रक्षा मंत्री);
 - वार्षिक शिखर बैठकें;
 - व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA);
 - हाई-स्पीड रेल (मुंबई-अहमदाबाद), स्वच्छ ऊर्जा और महत्वपूर्ण तकनीकों (सेमीकंडक्टर्स, एआई, 5G) में सहयोग।
- जापान ने भारत-जापान विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को गहरा करने की इच्छा व्यक्त है, और दोनों देश रक्षा, प्रौद्योगिकी एवं कार्यबल विकास में सहयोग बढ़ाने के लिए तैयार हैं। वर्तमान कार्य योजना के तहत अगले पांच वर्षों में 5 लाख कार्यबल आदान-प्रदान की सुविधा दी जाएगी — जिसमें भारत से 50,000 कुशल पेशेवर शामिल होंगे।
- **रक्षा और सुरक्षा सहयोग:** भारत और जापान ने संयुक्त सैन्य अभ्यासों को तीव्र किया है जैसे धर्म गार्जियन, जापान-भारत समुद्री अभ्यास (JIMEX), और मालाबार — जिसमें अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया भी क्वाड के अंतर्गत शामिल हैं।
 - ▲ 2020 में हस्ताक्षरित अधिग्रहण और पारस्परिक सेवा समझौता (ACSA) दोनों सेनाओं के बीच पारस्परिक लॉजिस्टिक समर्थन को सक्षम बनाता है, जिससे इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अंतर-संचालन क्षमता बढ़ती है।
- **आर्थिक और तकनीकी स्तंभ:** जापान भारत का पाँचवाँ सबसे बड़ा निवेशक है, जिसने 2014 की निवेश संवर्धन साझेदारी के अंतर्गत \$40 बिलियन से अधिक की प्रतिबद्धता व्यक्त की है। सहयोग के क्षेत्र हैं:
 - ▲ स्मार्ट शहर और औद्योगिक गलियारे (दिल्ली-मुंबई, चेन्नई-बेंगलुरु);
 - ▲ साइबर सुरक्षा और 5G नवाचार के लिए डिजिटल साझेदारी;
 - ▲ ऑस्ट्रेलिया के साथ आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (SCRI), जिससे चीन पर निर्भरता कम होती है।
- **समुद्री और क्षेत्रीय महत्त्व:** भारत और जापान दोनों इंडो-पैसिफिक को भारतीय और प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाला एक सतत क्षेत्र मानते हैं।
 - ▲ जापान की 'मुक्त और खुला इंडो-पैसिफिक' (FOIP) दृष्टि भारत की 'क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास' (SAGAR) सिद्धांत के साथ सामंजस्यशील है। क्वाड में उनकी संयुक्त नेतृत्व प्रतिबद्धता को दर्शाता है:
 - UNCLOS आधारित समुद्री व्यवस्था को बनाए रखना;
 - नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना;

- क्षेत्रीय क्षमता निर्माण को सुदृढ़ करना (ASEAN, प्रशांत द्वीप और अफ्रीका में)।

संबंधित चिंताएँ और चुनौतियाँ

- **रणनीतिक विषमता:** जापान अमेरिका का करीबी सहयोगी है, जबकि भारत रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखता है। यह चीन, क्षेत्रीय सुरक्षा एवं क्वाड प्राथमिकताओं पर भिन्न दृष्टिकोणों को उत्पन्न कर सकता है।
- **आर्थिक असंतुलन:** सुदृढ़ कूटनीतिक संबंधों के बावजूद द्विपक्षीय व्यापार सीमित है। जापान के भारत में निवेश उल्लेखनीय हैं, लेकिन भारत के जापान को निर्यात पिछड़े हुए हैं।
- **अवसंरचना बाधाएँ:** मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन जैसे प्रमुख परियोजनाएं भूमि अधिग्रहण और नियामक बाधाओं के कारण विलंबित हैं।
 - ▲ ये विलंब निवेशकों के विश्वास को प्रभावित कर सकते हैं और गति को धीमा कर सकते हैं।
- **सांस्कृतिक और व्यावसायिक अंतर:** भाषा की बाधाएं, कार्य संस्कृति में अंतर और भारत में नियामक जटिलता जापानी व्यवसायों को हतोत्साहित कर सकती हैं।
 - ▲ जापान-भारत स्टार्टअप हब इन अंतरालों को समाप्त करने का प्रयास करता है, लेकिन चुनौतियाँ बनी हुई हैं।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताएँ:** दोनों देश एक आक्रामक चीन से दबाव में हैं, लेकिन उनके खतरे की धारणा और प्रतिक्रियाएं भिन्न हैं।
 - ▲ क्वाड के अंदर समन्वय को राष्ट्रीय हितों और सामूहिक लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाना होगा।
- **प्रौद्योगिकी और नवाचार अंतर:** जापान रोबोटिक्स और उन्नत विनिर्माण में अग्रणी है, जबकि भारत आईटी एवं डिजिटल सेवाओं में सुदृढ़ है।
 - ▲ संयुक्त नवाचार के लिए इन ताकतों को संरेखित करने हेतु बेहतर नीति समन्वय और अनुसंधान सहयोग की आवश्यकता है।

आगे की राह: भारत-जापान संयुक्त दृष्टि आगामी दशक के लिए

- **लचीली आपूर्ति श्रृंखला और आर्थिक सुरक्षा:** महत्वपूर्ण खनिजों, सेमीकंडक्टर्स और हरित तकनीकों के लिए विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला को सुदृढ़ करना।
 - ▲ भारत के विनिर्माण और डिजिटल अवसंरचना में जापानी निवेश को बढ़ावा देना।
 - ▲ एशिया लचीली आपूर्ति श्रृंखला पहल (ARSCI) के अंतर्गत सहयोग।
- **कनेक्टिविटी और अवसंरचना साझेदारी:** भारत की अवसंरचना — हाई-स्पीड रेल, औद्योगिक गलियारे और स्मार्ट शहरों — में जापान की ODA एवं निजी निवेश का विस्तार।
 - ▲ दक्षिण एशिया, अफ्रीका और इंडो-पैसिफिक में तीसरे देश की अवसंरचना परियोजनाओं में सहयोग, पारदर्शिता एवं स्थायित्व पर बल।
- **रक्षा और सुरक्षा सहयोग:** समुद्री डोमेन जागरूकता (MDA) में गहरा सहयोग, संयुक्त अभ्यास और रक्षा प्रौद्योगिकी का सह-विकास।
 - ▲ भारत के 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के अनुरूप रक्षा उत्पादन साझेदारी पर ध्यान।
- **डिजिटल साझेदारी और महत्वपूर्ण तकनीकें:** 5G/6G, एआई, क्वांटम कंप्यूटिंग और साइबर सुरक्षा में सहयोग।
 - ▲ भारत-जापान डिजिटल साझेदारी 2.0 की स्थापना।
 - ▲ विश्वसनीय दूरसंचार नेटवर्क और डिजिटल शासन पर संयुक्त अनुसंधान।
- **ऊर्जा संक्रमण और जलवायु कार्रवाई:** हरित हाइड्रोजन, अमोनिया, अपतटीय पवन ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा सुरक्षा में सहयोग।
 - ▲ ऊर्जा दक्षता, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और कार्बन कैप्चर पहलों में निवेश।
 - ▲ भारत-जापान स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी (CEP) को सुदृढ़ करना।
- **लोगों के बीच आपसी संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** शैक्षिक, पर्यटन और युवा आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए नई पहल।

- ▲ जापान-भारत विनिर्माण संस्थान और भारतीय विश्वविद्यालयों में जापानी अनुदानित पाठ्यक्रमों के माध्यम से कौशल विकास कार्यक्रम।
- **शांतिपूर्ण और सतत भविष्य के लिए साझेदारी:** संयुक्त मानवीय सहायता, आपदा राहत, और वैश्विक स्वास्थ्य पहल।
 - ▲ वैश्विक दक्षिण में सतत विकास पर सहयोग को सुदृढ़ किया।
 - ▲ मानव-केंद्रित प्रौद्योगिकी और लचीले लोकतंत्रों के लिए साझा दृष्टिकोण।

Source: TH

विरासत

- **सामाजिक:** एक नारीवादी और राष्ट्रवादी प्रतीक, जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित किया।
 - ▲ वह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष करने वाली प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं।
- **ऐतिहासिक:** दक्षिण भारत में उपनिवेशवाद-विरोधी प्रारंभिक प्रतिरोधों में से एक।
- **सांस्कृतिक:** कर्नाटक की लोककथाओं और सामूहिक स्मृति में समाहिता।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

रानी चेन्नम्मा

संदर्भ

- कितूर रानी चेन्नम्मा उत्सव, रानी चेन्नम्मा की वीरता को सम्मानित करने के लिए आयोजित तीन दिवसीय उत्सव, कर्नाटक के कितूर में प्रारंभ हुआ।

परिचय

- वह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह करने वाली भारत की प्रारंभिक शासकों में से एक थीं — 1857 के विद्रोह से कई दशक पहले।
 - ▲ आज उन्हें कर्नाटक के गौरव और प्रारंभिक नारीवादी प्रतीक के रूप में स्मरण किया जाता है।

विद्रोह

- ब्रिटिश अधिग्रहण को रोकने के लिए चेन्नम्मा ने एक रिश्तेदार के पुत्र को उत्तराधिकारी के रूप में गोद लिया।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस गोद को अस्वीकार कर दिया — जो बाद में डलहौजी द्वारा औपचारिक रूप से स्थापित 'हड़प नीति' का प्रारंभिक उदाहरण बना।
- स्वायत्तता खोने की स्थिति में, उन्होंने ब्रिटिश नियंत्रण के आगे समर्पण करने के बजाय प्रतिरोध का मार्ग चुना।
- चेन्नम्मा को कैद कर लिया गया और 1829 में बंदी अवस्था में उनका निधन हुआ।

पूर्वी/ईस्ट तिमोर आसियान का 11वां सदस्य

संदर्भ

- दस सदस्यीय दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों का संगठन (आसियान) ने ईस्ट तिमोर को अपने नवीनतम सदस्य के रूप में स्वीकार किया।

परिचय

- ईस्ट तिमोर, जिसे तिमोर-लेस्ते के नाम से भी जाना जाता है, लंबे समय से आसियान में शामिल होने का प्रयास कर रहा था, क्योंकि यह संगठन क्षेत्र में आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा समन्वय बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह आसियान का वर्षों बाद प्रथम विस्तार है — इससे पहले 1999 में कंबोडिया को सदस्यता मिली थी।

ईस्ट तिमोर

- ईस्ट तिमोर ऑस्ट्रेलिया के उत्तर में प्रशांत महासागर में स्थित है।
- यह एक बड़े द्वीप का पूर्वी भाग है, जबकि इसका अधिकांश पश्चिमी भाग इंडोनेशिया के नियंत्रण में है।
- ईस्ट तिमोर चार शताब्दियों से अधिक समय तक पुर्तगाली उपनिवेश रहा, और 1975 में स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन केवल नौ दिन बाद इंडोनेशिया ने उस पर आक्रमण कर दिया।



दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों का संगठन (ASEAN)

- इसकी स्थापना 1967 में बैंकॉक, थाईलैंड में हुई थी।
- यह पाँच देशों द्वारा स्थापित किया गया था: इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड।
- उद्देश्य: शीत युद्ध के तनावों के बीच क्षेत्रीय सहयोग और स्थिरता को बढ़ावा देना।
- मुख्यालय: जकार्ता, इंडोनेशिया।
- वर्तमान सदस्य देश: आसियान में वर्तमान में 11 सदस्य देश हैं: ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम और ईस्ट टिमोर।
- आसियान भारत, चीन, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय संघ और अन्य देशों व संगठनों के साथ संवाद साझेदारी बनाए रखता है।

Source: IE

कॉफी

समाचार में

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय कॉफी की अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता में हो रही वृद्धि को उजागर किया।

कॉफी के बारे में

- भारत विश्व स्तर पर सातवां सबसे बड़ा कॉफी उत्पादक देश है, जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 3% योगदान देता है।
- भारत की लगभग 70% कॉफी का निर्यात किया जाता है, जिससे 2024-25 के दौरान लगभग 1.80 अरब

अमेरिकी डॉलर की विदेशी मुद्रा अर्जित हुई — जो भारत की कृषि-निर्यात टोकरी में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

- प्रमुख निर्यात गंतव्य देश हैं: इटली, जर्मनी, बेल्जियम और रूस।
- भारत में प्रमुख कॉफी उत्पादक राज्य हैं: कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और अन्य (आंध्र प्रदेश, ओडिशा, पूर्वोत्तर राज्य)।
- कूर्ग, चिकमंगलूर, वायनाड, अराकू घाटी GI-टैग प्राप्त किस्मों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- कॉफी की प्रमुख किस्में हैं: अरेबिका (Coffea arabica) और रोबस्टा (Coffea canephora)।

कोरापुट मॉडल (ओडिशा)

- कभी बंजर हो चुकी वन भूमि को अब कॉफी की खेती के माध्यम से पुनर्जीवित किया जा रहा है।
- यह कॉफी अब “विशेष जनजातीय कॉफी” के रूप में ब्रांड की जा रही है, जो अराकू कॉफी के समान है।

संस्थागत ढांचा

- कॉफी बोर्ड ऑफ इंडिया (1942): वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत।
- कार्य: कॉफी निर्यात का प्रचार, अनुसंधान और विकास, बाजार खुफिया आदि।
- मुख्यालय: बेंगलुरु।
- केंद्रीय कॉफी अनुसंधान संस्थान (CCRI): 1925 में कर्नाटक के चिकमंगलूर में स्थापित।

Source: IE

महा मेडटेक मिशन

समाचार में

- अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (ANRF) ने भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) और गेट्स फाउंडेशन के सहयोग से उच्च प्रभाव वाले क्षेत्रों में प्रगति के लिए मिशन (MAHA)-मेडिकल टेक्नोलॉजी (महा MedTech) लॉन्च किया है।

महा मेडटेक मिशन के बारे में

- यह अकादमिक और अनुसंधान संस्थानों, अस्पतालों, स्टार्टअप्स, MSMEs, मेडटेक उद्योग और विभिन्न संस्थाओं के बीच सहयोग सहित कई प्रकार की इकाइयों को वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।
- यह उन परियोजनाओं को समर्थन देगा जो प्रभावशाली मेडटेक समाधान को बाज़ार तक पहुँचाते हैं।
- इसका उद्देश्य भारत के मेडिकल टेक्नोलॉजी क्षेत्र में नवाचार को तीव्र करना, महंगे आयात पर निर्भरता को कम करना, और सस्ती व उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा तकनीकों तक समान पहुँच को बढ़ावा देना है।

भारत का मेडटेक क्षेत्र

- भारत का मेडटेक क्षेत्र एक तीव्र से बढ़ता हुआ “सनराइज़” उद्योग है, जो वर्तमान में लगभग 11–14 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2030 तक 30–50 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की संभावना रखता है।
- भारत एशिया में जापान, चीन और दक्षिण कोरिया के बाद चौथा सबसे बड़ा चिकित्सा उपकरण बाज़ार है।
- हाल ही में अपनाई गई सरकारी पहल और नीतियाँ हैं:
 - ▲ चिकित्सा उपकरणों के लिए PLI योजना (2020)
 - ▲ PRIP योजना (2023)
 - ▲ राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण नीति (2023)
 - ▲ चिकित्सा उपकरण पार्क आदि।

Source : PIB

एक्स्ट्रीमम-सीकिंग (ES) फीडबैक सिस्टम

संदर्भ

- वायु में लगभग स्थिर रहते हुए मंडराने की क्षमता — जो कीटों और हमिंगबर्ड्स में पाई जाती है — लंबे समय से वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती रही है, क्योंकि पारंपरिक वायुगतिकी के अनुसार यह अस्थिर और गणनात्मक रूप से जटिल प्रतीत होती थी।

- ▲ एक नए अध्ययन से पता चलता है कि होवरिंग वास्तव में एक एक्स्ट्रीमम-सीकिंग (ES) फीडबैक प्रणाली द्वारा नियंत्रित होता है।

एक्स्ट्रीमम-सीकिंग फीडबैक प्रणाली

- ES प्रणाली एक वास्तविक समय की फीडबैक प्रक्रिया है, जो उड़ने वाले जीव (कीट या पक्षी) को छोटे-छोटे समायोजन करने, उनके परिणामों को देखने और परीक्षण एवं त्रुटि के माध्यम से धीरे-धीरे स्थिरता बनाए रखने की अनुमति देती है — वह भी बिना विस्तृत वायुगतिकीय समीकरणों या जटिल न्यूरोल गणना की जानकारी के।
- ES फीडबैक का उपयोग करके किए गए सिमुलेशन में हॉकमॉथ, क्रेनफ्लाई, बंबलबी, होवरफ्लाई और हमिंगबर्ड जैसी प्रजातियों में होवरिंग की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक दोहराया गया।
- प्रत्येक मॉडल ने केवल सरल फीडबैक के माध्यम से ऊँचाई और स्थिरता बनाए रखी, न कि उड़ान गतिकी के विस्तृत मॉडल या जटिल गणना के माध्यम से।



महत्त्व

- **जीवविज्ञान के लिए:** यह दर्शाता है कि होवरिंग उन्नत न्यूरोल गणना नहीं, बल्कि सरल फीडबैक तंत्र से उत्पन्न हो सकता है।
 - ▲ यह इस बात की समझ को बढ़ाता है कि कीट कम मस्तिष्क शक्ति के साथ वास्तविक समय में स्थिरता कैसे बनाए रखते हैं।
- **इंजीनियरिंग के लिए:** यह जैव-प्रेरित ड्रोन डिज़ाइन के लिए संभावनाएं खोलता है, जिसमें जटिल नियंत्रण एल्गोरिदम के बजाय सरल फीडबैक लूप्स के माध्यम से हल्का, कुशल और स्थिर होवरिंग संभव हो सके।

Source: TH

उत्तराखंड बाहरी वाहनों पर 'ग्रीन उपकर' लगाने की योजना बना रहा है

संदर्भ

- उत्तराखंड ने भारत के अन्य हिस्सों से राज्य में प्रवेश करने वाले वाहनों पर 'ग्रीन उपकर' (Green Cess) लगाने की घोषणा की है।

मुख्य विशेषताएँ

- लागू होने की स्थिति:** यह उपकर उत्तराखंड के बाहर के सभी वाहनों पर लगाया जाएगा जो राज्य में प्रवेश करेंगे।
- छूट:** इलेक्ट्रिक, हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा और बैटरी से चलने वाले वाहनों को इस उपकर से छूट दी जाएगी।
- उपयोग:** इस उपकर से एकत्रित धनराशि का उपयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए किया जाएगा:
 - वायु प्रदूषण नियंत्रण उपायों के लिए।
 - हरित अवसंरचना और स्मार्ट ट्रैफिक प्रबंधन के लिए।
 - वायु गुणवत्ता निगरानी प्रणालियों के विस्तार के लिए।
 - सड़क की धूल नियंत्रण और वृक्षारोपण अभियानों के लिए।
 - हरित क्षेत्रों (ग्रीन जोन) के विकास के लिए।
- यह पहल भारत के राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) के अनुरूप है, जिसका लक्ष्य 2026 तक गैर-प्राप्ति वाले शहरों में पार्टिकुलेट मैटर (PM10 और PM2.5) की सांद्रता में 40% की कमी लाना है।

उपकर क्या है?

- उपकर एक विशेष उद्देश्य के लिए लगाया गया अधिभार होता है, जो वर्तमान करों (जैसे आयकर, जीएसटी या उत्पाद शुल्क) के अतिरिक्त लगाया जाता है।
- यह किसी विशेष उद्देश्य या क्षेत्र — जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण या अवसंरचना — के लिए धन एकत्रण हेतु एकत्र किया जाता है।

- सामान्य करों के विपरीत, जो भारत या राज्य के समेकित कोष में जाते हैं, उपकर से प्राप्त राशि सामान्यतः एक निर्दिष्ट कोष के लिए आरक्षित होती है और केवल उसी उद्देश्य के लिए उपयोग की जाती है।

Source: IE

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण(NBA)

समाचार में

- राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA) ने जैव विविधता अधिनियम, 2002 के अंतर्गत पहुँच और लाभ साझा करने (Access and Benefit Sharing - ABS) तंत्र के अंतर्गत उत्तर प्रदेश एवं सिक्किम में जैव विविधता प्रबंधन समितियों (BMCs) को ₹18.3 लाख वितरित किए हैं।

- ABS एक ऐसा तंत्र है जो जैविक संसाधनों से प्राप्त लाभों के समानुपातिक और न्यायसंगत वितरण को सुनिश्चित करता है।

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA) के बारे में

- राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA) एक वैधानिक और स्वायत्त निकाय है, जिसकी स्थापना जैव विविधता अधिनियम, 2002 के अंतर्गत की गई थी।
- यह पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन कार्य करता है तथा इसका मुख्यालय चेन्नई, तमिलनाडु में स्थित है।
- मुख्य कार्यों में शामिल हैं:**
 - जैविक संसाधनों के संरक्षण, सतत उपयोग और लाभों के न्यायसंगत वितरण पर केंद्र सरकार को परामर्श देना।
 - विदेशी कंपनियों और व्यक्तियों द्वारा भारतीय जैविक संसाधनों तक पहुँच को नियंत्रित करना।
 - वाणिज्यिक उपयोग के लिए अनुमति की निगरानी करना।
- संगठनात्मक ढांचा** इस अधिनियम के अंतर्गत तीन-स्तरीय प्रणाली का प्रावधान है:
 - राष्ट्रीय स्तर:** राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA)

- ▲ **राज्य स्तर:** राज्य जैव विविधता बोर्ड (SBBs)
- ▲ **स्थानीय स्तर:** जैव विविधता प्रबंधन समितियाँ (BMCs)

Source: DD News

पश्चिमी घाट पर संरक्षण संबंधी चिंताएँ

संदर्भ

- अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) ने अपनी हालिया वर्ल्ड हेरिटेज आउटलुक 2025 रिपोर्ट में पश्चिमी घाट को “गंभीर चिंता” की श्रेणी में रखा है, जो बढ़ते खतरों को दर्शाता है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष

- वैश्विक स्थलों में से लगभग 40% संरक्षण संबंधी चिंताओं का सामना कर रहे हैं।
- जलवायु परिवर्तन सबसे प्रमुख खतरा बना हुआ है, इसके बाद पर्यटन, आक्रामक प्रजातियाँ और अवसंरचना विकास हैं।
- सकारात्मक संरक्षण दृष्टिकोण वाले स्थलों की हिस्सेदारी घटकर 63% (2014–2020) से 57% (2025) हो गई है।
- **भारत के विश्व धरोहर स्थलों की स्थिति:**
 - ▲ **गंभीर चिंता:** पश्चिमी घाट, मानस राष्ट्रीय उद्यान, और सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान।
 - ▲ **कुछ चिंताओं के साथ अच्छा:** काजीरंगा, केवलादेव, नंदा देवी, और ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान।
 - ▲ **अच्छा:** कंचनजंघा राष्ट्रीय उद्यान।

पश्चिमी घाट

- पश्चिमी घाट भारत के पश्चिमी तट पर स्थित 1,600 किलोमीटर लंबी पर्वत श्रृंखला है, जो उत्तर में तापी नदी से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैली हुई है।
- यह छह राज्यों को कवर करती है — गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल। इस पर्वत श्रृंखला का लगभग 60 प्रतिशत भाग कर्नाटक में स्थित है।

महत्व:

- इस घाट ऊँचे पर्वतीय वन पाए जाते हैं, जो क्षेत्र की उष्णकटिबंधीय जलवायु को संतुलित करते हैं।
- यह 325 वैश्विक रूप से संकटग्रस्त वनस्पति, जीव, पक्षी, उभयचर, सरीसृप और मछली प्रजातियों का आवास है।
- पश्चिमी घाट को 2012 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्रदान किया गया था।

Source: TH

युगे युगीन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय

समाचार में

- युग युगेन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय की प्रथम गैलरी एक वर्ष में खुलने की संभावना है, जबकि विश्व के सबसे बड़े संग्रहालय की संपूर्ण अवधारणा आगामी 36 महीनों में तैयार हो जाएगी।

युग युगेन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय

- यह सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना का भाग है।
- यह “एडैप्टिव रीयूज” के माध्यम से विकसित किया जाएगा, जिसमें फ्रांस का सहयोग लिया जाएगा, जो ऐसे परियोजनाओं में अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध है — उदाहरणस्वरूप लौवर, ग्रांड पैले और ओतेल दे ला मरीन।
- इसमें उत्तर और दक्षिण ब्लॉकों की सममित इमारतों को संग्रहालय स्थलों में रूपांतरित किया जाएगा, ताकि एक नया राष्ट्रीय संग्रहालय बनाया जा सके जो हजारों वर्षों पुरानी सभ्यतागत और सांस्कृतिक विरासत को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करे।
- इसका उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करना है — एक कालातीत एवं शाश्वत भारत का उत्सव, जो हमारे गौरवशाली अतीत को खोजे, वर्तमान को प्रकाशित करे और उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करे।

Source: IE

रामपुर और मुदोल हाउंड नस्ल के कुत्तों को बीएसएफ में शामिल किया जाएगा

समाचार में

- सीमा सुरक्षा बल (BSF) ने सीमा सुरक्षा, उग्रवाद-रोधी अभियानों और विशेष ऑपरेशनों के लिए 150 स्वदेशी रामपुर एवं मुदोल हाउंड कुत्तों को प्रशिक्षण देना शुरू किया है।

मुदोल हाउंड्स

- इतिहास:** माना जाता है कि मुदोल हाउंड्स का प्रथम बार प्रजनन मुदोल (वर्तमान बागलकोट) के पूर्ववर्ती राज्य के राजा मालोजीराव घोरपड़े द्वारा किया गया था, जब उन्होंने अपनी रियासत की जनजातीय समुदायों द्वारा पाले गए कुत्तों की विशेषताओं को देखा।
 - कहा जाता है कि राजा ने इंग्लैंड की यात्रा के दौरान इन कुत्तों की एक जोड़ी किंग जॉर्ज पंचम को भेंट की थी, जिसके बाद इस नस्ल को मुदोल हाउंड नाम मिला।
- विशेषताएँ:** मुदोल हाउंड्स अपनी गति, सहनशक्ति, तीव्र दृष्टि और मजबूत सुरक्षा प्रवृत्ति के लिए जाने जाते हैं।
 - इन्हें भारतीय सेना द्वारा 2016 में मेरठ स्थित रिमाउंट एंड वेटरनरी कॉर्प्स (RVC) प्रशिक्षण केंद्र भेजा गया था — यह प्रथम बार था जब किसी स्वदेशी नस्ल को वहाँ प्रशिक्षित किया गया।

रामपुर हाउंड

- इतिहास:** रामपुर हाउंड्स का प्रजनन लगभग 300 वर्ष पहले उत्तर प्रदेश के रामपुर के नवाब द्वारा अफगान और इंग्लिश ग्रेहाउंड्स से किया गया था।

- ऐतिहासिक रूप से इनका उपयोग शिकार और सुरक्षा के लिए किया जाता था।
- भारत की स्वतंत्रता के पश्चात इस नस्ल में गिरावट आई, जिससे शुद्ध नस्लें आज दुर्लभ हो गई हैं, हालांकि संरक्षण प्रयास जारी हैं।
- विशेषताएँ:** रामपुर हाउंड्स तीव्र, एथलेटिक साइटहाउंड्स हैं जो गति और सहनशक्ति के लिए बनाए गए हैं।
 - ये अपने परिवारों के प्रति वफादार और आज्ञाकारी होते हैं, शिकार एवं दौड़ने के कार्यों में बुद्धिमान होते हैं, तथा अजनबियों के प्रति आरक्षित रहते हैं।
 - स्वभाव से संकोची होते हुए भी ये सतर्क और रक्षक बन सकते हैं, जिससे ये प्रभावी गार्ड डॉग्स बनते हैं।
- विश्व भर की सेनाओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले कुत्ते** सेनाओं द्वारा कुत्तों का चयन विस्फोटक पहचान, गश्त और गिरफ्तारी, खोज एवं बचाव, तथा ट्रैकिंग जैसे कार्यों के लिए किया जाता है।
 - इनकी उपयुक्तता बुद्धिमत्ता, प्रशिक्षण क्षमता, शारीरिक फुर्ती, सहनशक्ति और तीव्र सूंघने की क्षमता जैसे गुणों पर निर्भर करती है।
- उदाहरण के लिए, अमेरिकी सेना मुख्य रूप से बेल्जियन मेलिनोइस नस्ल का प्रजनन और प्रशिक्षण करती है।

Source :IE

